पाठ 11 **दिसम्बर 8-14**

उपासना में एकता

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 8**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : "प्रका० 4: 8,11; मत्ती 4: 8-9; दानि० 3: 8-18; प्रका० 14: 9; प्रका० 14: 6-7; प्रेरि० 4: 23-31.

याद वचन: *"फिर मैंने एक और स्वर्ग दूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था। उसने बड़े शब्द से कहा, "परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है; और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।" (प्रका० 14: 6-7)।*

पेंतिकोस्ट के दिन के तुरंत बाद, प्रारंभिक मसीहियों ने अपने अधिकांश समय उपासना में बिताये। "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे" (प्रेरि० 2: 42)। आनन्द जो यीशु को मसीहा जानने-से आया, जो पुराने नियम की भविष्यद्वाणी की पूर्ति थी, उनके हृदयों को परमेश्वर के प्रति धन्यवाद ज्ञापन और कृतज्ञता से भर दिया। इस अद्‌भुत सच्चाई को जानना क्या ही सुअवसर है। इन प्रारंभिक मसीहियों ने एक साथ सहभागिता, अध्ययन, और प्रार्थना में समय बिताना जरूरी समझा, ताकि परमेश्वर को जीवन में उसके प्रकाशन के लिये, मृत्यु, और यीशु के पुनरुत्थान के लिये और जो कुछ भी उसने उनके जीवन में किया धन्यवाद दे सकें।

यीशु मसीह की कलीसिया परिभाषित रूप से उपासना करने वालों का समुदाय है, जो परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है "तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं" (1पत० 2: 5)। समुदाय की उपासना में परमेश्वर को अर्पित कृतज्ञता परमेश्वर के चरित्र की समानता में लोगों के हृदय और मनों को परिवर्तित करता है और सेवकाई के लिये उन्हें तैयार करता है।

इस सप्ताह का पाठ उपासना के अर्थ पर केंद्रित है और यह किस प्रकार यीशु में विश्वासियों के बीच एकता को सुरक्षित रखता है।

---

* सब्त, दिसम्बर 15 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

रविवार **दिसम्बर 9**

हमारे सृजक और उद्धारक की उपासना करना

उपासना के विषय चर्चा में हम बहुधा, उपासना के मूल तत्वों पर प्रकाश डालते हैं, यह किस चीज को शामिल करता है और कैसे होता है। परन्तु उपासना का असल अर्थ क्या है? परमेश्वर की उपासना का क्या अर्थ है? और हम इसे क्यों करते हैं? भजन० 29:2 में दाऊद वर्णन करता है: "यहोवा के नाम की महिमा करो; पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो" (भजन० 29:2)। यह भजन हमें उपासना के अर्थ को समझने के सही दिशा को संकेत करता है। यहोवा की उपासना का अर्थ है उसके लायक आदर और महिमा उसे देना।

पढ़ें प्रका० 4 एवं 5. स्वर्ग के निवासी परमेश्वर और यीशु को, जो परमेश्वर का मेम्ना है, उपासना करने के क्या कारण देते हैं? देखें प्रका० 4:8, 11; 5:9-10,12,13.

स्वर्ग के सिंहासन में उपासना का यह वर्णन, जिस प्रकार यीशु संसार के उद्धारकर्ता और परमेश्वर के मेमने के रूप में बतलाया गया है प्रेरणा दायक है। उपासना होती है जब परमेश्वर की सृष्टि उसे धन्यवाद और प्रेम के शब्द कहती है, क्योंकि उसने उनके लिये जो किया है। उपासना उद्धार और परमेश्वर की सृष्टि के लिये एक एहसानमंद व्यक्ति का प्रत्युत्तर है। अंतिम समय में परमेश्वर के उद्धार के निमित उसी तरह उद्धारक भी प्रेम और प्रत्युत्तर में साथ होगा। "वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, "हे स्र्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य महान और अद्भुत हैं; हे युग-युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है" "हे प्रभु कौन तुझ से न डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा ? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है। सारी जातियाँ आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं" (प्रका० 15:3,4)।

इसलिये उपासना उसके महान कामों के लिये परमेश्वर में हमारे विश्वास का प्रत्युत्तर है: पहला, हमें सृजन के लिये, और, दूसरा, हमें उद्धार करने के लिये। उपासना में हम परमेश्वर को श्रद्धा, आदर, प्रशंसा, प्रेम, और आज्ञापालन देते हैं। हम विश्वास करते हैं वह इसे पाने के योग्य है। संभवत: जो हम परमेश्वर के विषय में हमारे सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता के तौर पर जानते हैं उससे आता है जो उसने पवित्र शास्त्र में हमारे लिये प्रकट किया। इससे बढ़कर मसीही जो परमेश्वर के विषय में जानते हैं, यीशु की सेवकाई और व्यक्ति में पूर्णता प्रकट हुआ (देखें यूहन्ना

14: 8-14)। यही कारण है मसीही यीशु को उद्धारकर्त्ता और मुक्तिदाता के तौर पर उपासना करते हैं, जैसा कि उसके त्याग की मृत्यु और पुनरुत्थान उपासना के केंद्र बिन्दु हैं।

जब मसीही उपासना के लिये एक साथ आते हैं, यह धन्यवाद और भक्ति स्वरूप आगे बढ़ती है।

सोचिए, हमारे सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्त्ता के तौर पर मसीह में हमें क्या दिया गया है, उसने हमसे क्या ले लिया और हमें क्या दिया- सब कुछ क्योंकि वह स्वेच्छा से हमारे लिये मरा। ये सच्चाई क्यों हमारी उपासना की नींव होनी चाहिए ?

सोमवार **दिसम्बर 10**

झूठी उपासना

पढ़ें मत्ती 4: 8-9. जंगल में यीशु की तीसरी परीक्षा क्या थी ?

घमंड और उद्दंडता के साथ शैतान ने स्वयं को संसार का सही शासक घोषित किया, इसमें की सम्पत्ति का मालिक, इसमें रहने वाले सभों से आदर और सत्कार का दावा करता था, मानो उसने ही संसार की सृष्टि की है। सृष्टिकर्ता परमेश्वर के लिये क्या ही अपमान! शैतान ने प्रकट कर दिया कि वह वास्तविक उपासना के विषय में अच्छी तरह जानता है: यह है संसार के सही मालिक को आदर और सत्कार देना।

दानिएल 3 में तीन इब्री मित्रों के अनुभव और प्रकाशितवाक्य 13:4 एवं 14: 9-11 के अंतिम समय की तुलना करें। अंतिम समय में दांव पर क्या होता है? दोनों वर्णन में मूल विषय क्या है?

कैन और हाबिल से लेकर, बेबीलोन में तीन इब्री लड़कों तक, और "पशु की छाप" (प्रका० 16: 2) से संबंधित अंतिम घटना तक, शैतान झूठी उपासना के तरीके को स्थापित करना चाहता है, जो लोगों को सच्चे परमेश्वर से छीन सकता है और सहज ही स्वयं को उपासना के स्थान पर स्थापित करता है। आखिरकार पतन से पूर्व वह परमेश्वर के समान होना चाहता था (यशा० 14: 14)। यह कोई संयोग नहीं है कि जैसे तीन युवा मृत्युदण्ड का सामना इसलिये कर रहे थे क्योंकि वे मूर्ति की उपासना नहीं करना चाह रहे थे, इसी प्रकार अंत के दिनों में परमेश्वर के विश्वस्त लोग "छाप" की उपासना न करने के लिये मृत्युदण्ड का सामना करेंगे। किसी "छाप" को क्यों जब हम सच्चे परमेश्वर की उपासना के लिये बुलाये गये हैं?

"दूश के मैदान में इब्री युवाओं के अनुभव से हम महत्त्वपूर्ण पाठ सीखते हैं...।

"परमेश्वर के लोगों के सामने संकट की घड़ी विश्वास की पुकार करेगी जो नहीं डगमगाएगी। उसकी संतान इसे उजागर करेंगे कि वही उनका एकमात्र उपासना करने की चीज है, और विचारने की कोई जगह नहीं जो उन्हें झूठी उपासना के लिये प्रेरित करे। विश्वस्त हृदय के लिये पापमय, सीमित मनुष्य का आदेश, अनंत परमेश्वर के वचन की तुलना में निरर्थकता में छिप जाता है। सच्चाई का पालन होगा जौभी कि परिणाम कैद या निर्वासन या मृत्यु हो।" Ellen G. White, Prophets and kings, PP. 512,513.

अभी भी, कौन से विभिन्न तरीके हैं जिनके द्वारा सच्ची उपासना के बदले हम किसी की भी उपासना करने को परीक्षित होते हैं? झूठी उपासना किस प्रकार सूक्ष्म खतरा हो सकती है जितना कि हम सोचते हैं? कौन-सी चीजें हैं जिनके द्वारा हम उपासना के लिये परख जाते हैं?

मंगलवार **दिसम्बर 11**

पहले दूत का संदेश

सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट प्रकाशितवाक्य 14:6-12 के तीन दूतों के संदेश को अपने मिशन (कार्य) और यीशु के दूसरे आगमन से ठीक पूर्व अपने संवाद के केन्द्र के तौर पर चित्रित करते हैं (प्रका० 14:14-20)। ये महत्त्वपूर्ण संदेश संसार के सभी वासियों को "ऊँची आवाज में" प्रचार किया जाना है।

पढ़ें प्रका० 14:6-7. पहले दूत का संवाद क्या है, और यह परमेश्वर के विषय क्या कहता है?

_____

_____

प्रथम तीन दूतों का संवाद पूरे संसार में एक संदेश की घोषणा करता है। यह मत्ती 24:14 में यीशु की भविष्यद्वाणी का पूरा होना है। यहाँ पर इन तीन दूतों और उनके कार्य का चित्रण करना जरूरी और जल्दबाजी है। पहला संवाद लोगों को परमेश्वर पर केंद्रित होने को कहता है क्योंकि "उसके न्याय का समय आ गया है" (प्रका० 14:7)। यीशु का दूसरा आगमन न्याय का मुख्य स्रोत है।

स्वर्ग दूत कहता है "परमेश्वर से डरो" (प्रका० 14:7)। उनके लिये जो परमेश्वर को गंभीरता से नहीं लेते, यह संवाद और कार्य के लिये बुलाहट निश्चय ही उनके मनों में डर पैदा करेगा। परन्तु उनके लिये जो यीशु के अनुयायी रहे हैं, यह बुलाहट उनके लिये भक्ति और आदर है। वे स्वर्ग की

ओर देखते हैं और उसकी प्रतिज्ञाओं के पूरे होने को देखते हैं। परमेश्वर के लिये आदर की भावना उन्हें वशीभूत कर लेती है।

"और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए" (प्रका० 14: 7)। यह भाषा, सृष्टि के जिक्र के साथ, सब्त आज्ञा की ओर अचूक संकेत करती है (देखें निर्ग० 20: 8-11)। सृष्टि का परमेश्वर, जिसने अपनी सृजन शक्ति की यादगारी के तौर पर सब्त की स्थापना की, वही उपासना और आदर के योग्य है।

यह रुचिकर है कि अंतिम समय में उपासना, मानव जाति की वफ़ादारी के लिये महान संघर्ष में एक खास मुद्दे के तौर पर चिह्नित किया गया है। यह विश्वव्यापी ऐलान सृजनहार की उपासना की एक बुलाहट है।

"अंतिम संकट में मुख्य मुद्दा उपासना होगा। प्रकाशितवाक्य स्पष्ट करता है कि परख उपासना का इन्कार नहीं होगी वरन् यह कि किसकी उपासना करनी है। अंत के समय में केवल दो दल के लोग होंगे: वे जो परमेश्वर का भय मानते और उसकी उपासना करते हैं (11: 1, 18; 14: 7) एवं वे जो सच्चाई को तुच्छ जानते और अजगर और पशु के उपासक हैं (13: 4-8, 14: 9-11)....

"यदि उपासना अंतिम संघर्ष में केन्द्रित मुद्दा है तो आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर अपने अंतिम समय के सुसमाचार को पृथ्वी के लोगों को कहते हुए भेजता है कि इसे गंभीरता से लें और सृष्टिकर्त्ता के रूप में जो योग्य है उसकी उपासना करें।" Ranko Stefanovic, Revelation of Jesus Christ: Commentary on the book of Revelation, PP. 444, 445.

बुधवार **दिसम्बर 12**

बाईबल अध्ययन और सहभागिता

पढ़ें प्रेरि० 2: 42. प्रारंभिक मसीही उपासना के कुछ मूल भूत तत्व क्या थे?

"और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे" (प्रेरि० 2: 42)। कलीसिया के शुरुआती क्षणों से उपासना प्रेरितों द्वारा हमें दिये गये परमेश्वर के वचन के अध्ययन की केन्द्रियता द्वारा चरित्रित किया गया है। प्रथम मसीही यीशु मसीहा के विषय इसने जो कहा पवित्र शास्त्र के अध्ययन में विश्वस्त थे। वे निरंतर सहभागिता में थे कि परमेश्वर की आशिषों को एक दूसरे को बाँटी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दी थी ताकि परमेश्वर के साथ आत्मिक कदम में एक दूसरे को प्रोत्साहित करें।

वचन में उन्होंने पवित्र सच्चाई की सुरंग बनाई जो संसार के लिये उनके संवाद की नींव बनी।

दूसरे विश्वासियों के साथ सहभागिता में, परमेश्वर के वचन के अध्ययन की महत्ता के विषय में, अग्रलिखित पदस्थल क्या कहते हैं ?

2राजा 22: 8-13 _____

प्रेरि० 17: 10, 11 _____

2तीमु० 3: 14-17 _____

"जहाँ-कहीं भी सुसमाचार की सच्चाई की घोषणा होती है, वे जो ईमानदारी से अच्छाई करने की चाह रखते हैं पवित्र शास्त्र की गहन खोज की ओर अगुवाई होते हैं।

इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम झलक में यदि उन्हें जो परख की सच्चाई बतलाई गई है बीरिया वासियों के उदाहरण का पीछा करते, प्रतिदिन पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते और उन्हें दी गई परमेश्वर के वचन के संवादों की तुलना करते, आज परमेश्वर की व्यवस्था को मानने वाले की संख्या अधिक होती, जबकि अभी तुलानात्मक रूप से बहुत कम हैं।"– Ellen G . White, The Acts of the Apostles, P. 232.

सत्य के कारण हम जुड़े हुए लोग हैं जिसका हम प्रचार करते हैं, सत्य जिसे हम परमेश्वर के वचन में पाते हैं। प्रारंभिक दिनों में परमेश्वर की कलीसिया की सच्चाई यह थी, और आज भी यह सत्य है। परमेश्वर के वचन का अध्ययन, परमेश्वर की हमारी उपासना और लोगों के रूप में हमारी एकता, इन दोनों के स्वभाव का गठन करता है, जिन्हें संसार में तीन दूतों के संवाद को फैलाने के लिये बुलाया गया है। जब हम एक परिवार के रूप में सहभागिता और उपासना के लिये एक साथ जमा होते हैं, पवित्र शास्त्र हमारे काम की तैयारी के लिये, हमारे जीवन की अगुवाई के लिये और यीशु के दूसरे आगमन के लिये परमेश्वर के वचन से, हम से बातें करता है।

बाईबल में, जिसमें हम विश्वास करते हैं, कितनी मजबूती से आप स्थिर हैं? अर्थात् क्या आप उस हद तक स्थिर हैं, जैसे तीन इब्री युवा, कि मृत्यु का सामना कर सकें ?

बृहस्पतिवार **दिसम्बर 13**

रोटी तोड़ना और प्रार्थना

प्रारंभिक कलीसिया ने जो भी चुनौती का सामना किया, वे यीशु में अपने सामान्य विश्वास में और सच्चाई में जिसे संसार में फैलाने के लिये उसने उन्हें नियुक्त किया था, एकजुट थे। यही है जिसे

पतरस ने "वर्तमान सत्य" कहा (2 पत० 1:12), और इस प्रकार सच्चाई में एकजुट होकर, उन्होंने भिन्न-भिन्न तरीके से अपनी एकता को व्यक्त किया।

"और वे प्रेरितों से..... रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे" (प्रेरि० 2:42)। संभवत: रोटी तोड़ने का जिक्र सहभागिता के भोजन को संकेत करता है या प्रतिदिन के भोजन को जो विश्वासियों के बीच में साझा किया जाता था। सहभागिता के भोजन के दौरान कुछ विन्दुओं पर, कोई रोटी के ऊपर खास आशीष मांगता और यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की यादगारी में पीता, इस उम्मीद में कि उसका वापस आना जल्द हो। इस प्रकार प्रारंभिक मसीही यीशु के जीवन और सेवकाई के अर्थ को याद करने में अपना समय अर्पित करते थे और इन बातों को सहभागिता के भोजन के समय बात करने में खुशी महसूस करते थे। भोजन की साझेदारी का समय उपासना का क्षण होता था। "वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे, और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे, और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरि० 2:46-47)। बेशक, सहभागिता का यह समय एक साथ यीशु में उनकी एकता की भावना को सुदृढ़ करने में बड़ा योगदान दिया।

प्रारंभिक मसीहियों के एक साथ प्रार्थना करने के प्रेरितों की किताब में हमारे लिये कौन-से उदाहरण हैं? उन्होंने किस निमित प्रार्थना की?
प्रेरि० 1:14 _____
प्रेरि० 4:23-31 _____
प्रेरि० 12:12 _____

प्रारंभिक कलीसिया ने परमेश्वर के साथ सीधा संपर्क हेतु सौभाग्य का आनन्द लिया और उपासना में एक साथ मिलकर उससे निवेदन करना न भूला। पौलुस तीमुथियुस को लिखी अपनी पहली पत्री में प्रार्थना की महत्ता का उल्लेख करता है जब मसीही एक साथ होते हैं (1तीमु० 2:1)। इफिसियों के लिये भी उसने प्रार्थना की जरूरत पर जोर दिया: "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और विनती करते रहो, और इसीलिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो, और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस के साथ सुसमाचार का भेद बता सकूँ (इफि० 6:18-19)।

कौन से तरीके हैं जिसे हम सामान्य कारणों के लिये मध्यस्थता की प्रार्थना की शक्ति के द्वारा एक गहरी एकता का अनुभव कर सकते हैं ? यह प्रार्थना कलीसिया के तौर पर हमें जुड़ने में कैसे मदद करती है?

शुक्रवार **दिसम्बर 14**

अतिरिक्त अध्ययनः Read the articles "Prayer" PP. 1044-1046, and "Worship", PP. 1290, 1291, in The Ellen G. White Encyclopedia.

"सृष्टि की यादगारी के तौर पर सब्त का महत्त्व यह है कि यह हमेशा यथार्थ कारण को पेश करता है कि क्यों परमेश्वर ही की उपासना करनी चाहिए"– क्योंकि वह सृष्टिकर्त्ता है, और हम उसकी सृष्टि हैं। 'इस प्रकार सब्त ईश्वरीय उपासना की नींव में अवस्थित है, क्योंकि यह बहुत ही प्रभावशाली ढंग से इस महान सच्चाई को सिखलाता है और कोई अन्य संस्था ऐसा नहीं करती (सिखाती)। ईश्वरीय उपासना की सच्ची पृष्ठभूमि, केवल सातवाँ दिन ही में नहीं, परन्तु सारी उपासनाएँ सृष्टिकर्त्ता और उसकी सृष्टि के बीच विशिष्टता में पाई जाती हैं। ये महान सत्य कभी पुराना नहीं हो सकता, और कभी भुलाया नहीं जाना चाहिए।'–

J.N. Andrews- History of the Sabbath, Chapter 27. यह सच्चाई मनुष्यों के दिमाग से पूर्व रखा जाना था, जब परमेश्वर ने सब्त की स्थापना अदन में की; और तब तक यह तथ्य कि वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है, कारण के तौर पर निरंतर चलता है कि हम क्यों उसकी उपासना करें, लम्बे समय तक सब्त इसकी यादगारी और चिह्न के तौर पर जारी रहता है। यदि सब्त को वैश्विक रूप में माना जाता, मनुष्य के विचार और प्रेम उपासना और भक्ति के तौर पर सृष्टिकर्त्ता की ओर अगुवाई करते, और यहाँ पर कोई मूर्तिपूजक, नास्तिक, या अविश्वासी न होता। सब्त पालन सच्चे परमेश्वर के प्रति वफादारी का संकेत है, "वह जिसने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जल के सोते बनाये।" यह पीछा करता है कि संवाद जो मनुष्य को परमेश्वर की उपासना का हुक्म देता है और उसकी आज्ञाओं को मानना सिखाता है खास तौर से उन्हें चौथी आज्ञा मानने को आह्वान करता है।"– Ellen G . White, The Great Controversy, PP. 437,438.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. जैसा कि उपासना, सृष्टि, और उद्धार इतनी निकटता से संबंध हैं, आप कैसे सोचते हैं, सब्त का उत्सव झूठी उपासना के लिये परमेश्वर का

प्रतिकारक हो सकता है? प्रका० 14:6-7 की अंतिम समय की भविष्यद्वाणी में सब्त की क्या भूमिका है? पहले दूत के संवाद में सब्त की चर्चा क्यों की गई है ?

2. अकसर हम चीजों की सूची के तौर पर सब्त के विषय बातें करते हैं– चीजें जिन्हें उपासना के समय हमें करना चाहिये या नहीं। क्या यह काफी है? वाकई में उपासना किस विषय में है? आपकी स्थानीय कलीसिया किस प्रकार अर्थपूर्ण उपासना का अनुभव कर रही है?

3. कुछ समाजों में, मसीही समुदाय की सुस्त उपासना भुला दी जा रही है या त्यागी जा रही है, यह ऐडवेंटिस्ट समुदाय में भी देखा जा रहा है। इस शैली को बदलने के लिये आप की स्थानीय कलीसिया क्या कर सकती है ?

साराँश:- उपासना उद्धार के उसके वरदान के लिये परमेश्वर के मसीही विश्वासियों का धन्यवादी उत्तर है। यह एकता और सहभागिता के मसीही समुदाय का एक आवश्यक तत्त्व भी है। बगैर प्रार्थना और बाईबल अध्ययन के हमारे लिये परमेश्वर की सच्चाई को जानने की एक चाह में, हमारा समुदाय मसीह में एकता का अनुभव करने में असफल हो जायेगा।